प्राक्कथन

:- प्रा क्क थ न -:

प्रस्तुत प्रबंधमें मैंने हिंदीके मनोवैज्ञानिक उपन्यास शिल्पी जैनेंद्रकुमारजीकी औपन्यासिक कृतियोंके पति- पात्रोंका अध्ययन प्रस्तुत किया है. जैनेंद्रकुमार मानव जगत्के सफल चितेरे हैं. जीवनके घात-प्रतिघातोंसे जूझते - जूझते उन्होंने समाजके व्यापक धरातलको अति - सूक्ष्मतासे देखा है. सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, साहित्यिक परिस्थितियोंके साथ- साथ कानूनी स्थिती और इन परिस्थितियोंमें उलझे हुये पात्रोंका मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्र उन्होंने अपने उपन्यासों में निर्मित किये हैं. समाजके विभिन्न धरातलके लोग उनके उपन्यासोंमें पाये जाते हैं. साधारणसे साधारण आदमीसे लेकर उच्चतम ओहदेको धारण करनेवाले उच्चभ्रू आदमियोंतक उनकी दृष्टी पहुँच चुकी है. उनके पात्र असामान्य होनेसे उनके व्दारा असाधारण कार्यव्यापार घटित होते हैं. पैसों की कमी उनके पात्रोंके पास नही हैं. फिर भी वे सधन नहीं है. क्रांतिकारियोंसे पास तो पैसोंकी कमी हैं, लेकिन धन, आश्रय और सहायता करनेवालोंकी भी यहाँ कमी नहीं हैं. जनजागरण, स्वतंत्रता प्राप्तीकी लालसा, राष्ट्रका उत्थान, स्वतंत्रतासे प्राप्त मजबूरियाँ, शांतिकी खोज आदि विभिन्न विषयोंका विश्लेषण करते करते जैनेंद्रजीने विस्तृत और व्यापक जीवन पहलुओंको खोज निकाला हैं. समाजके सभी स्तरोंके पात्रोंको लेकर उनके उपन्यास आगे बढते हैं. जैनेंद्रजीके उपन्यासोंमें पात्रोंकी संख्या कम रही हैं. और इन पात्रोंमें पति पात्र कम रहे हैं. पात्र निम्न वर्गके कम लेकिन वकील, जज, राजनीतिज्ञ, डॉक्टर और धनी वर्गके अधिक हैं.

यह लघु - प्रबंध पांच अध्यायोंमें विभाजित हैं. प्रथम अध्यायमें उपन्यासकार जैनेंद्रजीकी संक्षिप्त जीवनी और उनका व्यक्तीत्व प्रस्तुत किया हैं. जिसमें जन्म, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, विवाह, पारिवारीक जीवन, साहित्य-

साधनाकी प्रेरणा आदिके बारेमें विवरण आया है. साहित्य-कारकी कृतियोंको समझानेके लिए उनके व्यक्तित्वसे भी परिचित होना पडता है. क्योंकि पात्र उपन्यासकारके मानसमें जन्म लेते हैं. अत: जैनेंद्रजीके व्यक्तित्वको भी यहां उजागर करनेका प्रयत्न किया है.

द्वितीय अध्यायमें कालक्रमानुसार जैनेंद्रजीके उपन्यासोंका विवरण आया है. " परख " से लेकर " अनामस्वामी" तक ग्यारह उपन्यासोंकी जानकारी देकर; इन उपन्यासोंकी विशेषताएँ अभिव्यक्त की हैं. कथावस्तुकी अपेक्षा पात्रोंके विचार, उनका जीवन दर्शन एवं आंतरिक जगतका चित्रण उपन्यासोंमें अधिक रहा है. इसलिए इस अध्यायमें पहले ग्यारह उपन्यासोंकी संक्षिप्त जान-कारी देकर बादमें उनमें व्याप्त विशेषताओंका स्पष्टीकरण किया हैं.

तृतीय अध्यायमें भी द्वितीय अध्यायके अनुसार दो उपविभागोंको एक सूत्रमें पिरोया हैं. इसमें जैनेंद्रजीके ग्यारह उपन्यासोंके पुरुष-पात्रोंके नाम क्रमश: आये हैं. बादमें इन सभी पुरुष - पात्रोंकी विशेषताएँ दी है. जैनेंद्रजीके पुरुष - पात्र वकील, जज, राजनीतिज्ञ, मंत्री, डाक्टर, उद्योगपति, व्यापारी, प्राध्यापक, अध्यापक, सरकारी अफसर, जमींदार-कृषक, पत्रकार, साहित्यकार चिंतक, क्रांतिकारी, समाज-सेवी, फौजी,सामान्य कर्मचारी, मजदूर घरेलू नौकर, रिटायर्ड वृध्द आदि वर्गके रहे हैं. सामाजिक विधिनिषेधोंके प्रति इन पात्रोंके मनमें विद्रोह है, इन विद्रोह का मूल कारण उनकी व्यक्तिगत समस्याएँ रही हैं. इन पुरुष-पात्रोंकी विशेषताएँ नये ढंगसे यहां प्रस्तुत की हैं.

..३..

चतुर्थ अध्यायमें उपन्यासोंके [illegible] पति-पात्रोंका अध्ययन विस्तृत रूपसे विवेचित किया है. इन पात्रोंका विश्लेषण और चित्रण बडी सूक्ष्मतासे किया हैं. आज-तक अनेकोंने जैनेंद्रजीके उपन्यासोंकी नारी-पात्रोंकी ओर अधिक ध्यान दिया हैं. यहां इन नारियोंके पतिओंका समीचीन विश्लेषण और उनके अंतर्जगतको उद्घाटित करनेका भरसक प्रयत्न किया हैं. पति-पत्नी संबंधोंके साथ-साथ यहां पति और अन्य नारी संबंधोंके प्रति भी ध्यान दिया हैं. जैनेंद्रजीके पति-पात्रोंकी अपेक्षा पत्नियाँ ही अधिक स्वतंत्र और उन्मुक्त आचरण करनेवाली रही हैं. अतः पति-पात्रोंका विवेचन करते समय " पत्नी और अन्य पुरुष संबंध " के बारेमें भी जानकारी दी हैं. सामाजिक रहन सहन के अनुसार पत्नीके साथ रहनेवाले पतियोंके साथ-ही-साथ, पत्नियोंद्दारा छोडे गये पति, विधुर पति, पत्नियोंका त्याग किये हुये पति, काम अभुक्तिसे ग्रस्त पति आदि पति-पात्रोंको भी इस अध्यायमें स्थान देकर क्रमशः उनका चारित्रिक विश्लेषण किया हैं. ये पति-पात्र नारी पात्रोंकी अपेक्षा अधिक उलझे हुये हैं. इनके व्दाराही जैनेंद्रजीने अपना विशेष मंतव्य उद्घोषित किया है. इन पति-पात्रोंका जीवन दर्शन, आचार-विचार और उनके नारियोंके साथ संबंधोंको इस अध्यायमें व्यक्त किये हैं.

पाँचवा अध्याय उपसंहारका हैं. इसमें पूर्ववर्ती उपन्यासोंकी अपेक्षा जैनेंद्रजीके उपन्यास मनोवैज्ञानिक शैलीके कारण चरित्रचित्रण की दृष्टिसे अलग हैं, यह दिखाकर पति-पात्रोंकी विशेषताएँ इसमें आयी है.

प्रस्तुत शोध-प्रबंध श्रध्देय राजाराम कॉलिजके प्रोफेसर डा. सरजूप्रसाद मिश्रजीके कृपापूर्ण निर्देशनमें लिखा गया है. सतत प्रेरणा और सत्परामर्श एवं प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है.

..४..

यदि आप बार बार तगज न करते तो शायद यह लघु प्रबंध अधूरा ही रह जाता, लेकिन शोध कार्य कालमें निरुत्साहित हो जानेपर आपका शांत गंभीर व्यक्तित्व और स्नेहमय उदार भाव सदैव मेरा संबल रहा हैं. आभार प्रदर्शनकी औपचारिकतासे मैं आपके ऋणसे मुक्त होना नहीं चाहता. क्योंकि आपकी वरद प्रेरणा एवं कृपायुक्त स्नेह-भावका मैं निरंतर प्रार्थी बनाना चाहता हूँ. तथापि आपकी उदार और स्नेहपूर्ण भावना एवं कृपायुक्त दिशा- दर्शनके लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ.

आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा के सहृदय और उदारमना प्राचार्य व्ही.डी. माने जी के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिनका उत्साह-वर्धक प्रोत्साहन और आशिर्वाद मुझे सदैव मिलता रहा. आष्टा महा-विद्यालयके हिंन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रा.बी.एस. जाधव, एवं प्रा. ए.बी. भोई का भी मैं हृदयसे आभारी हूँ.

शोधकार्य पूरा करनेके लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापूर आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा, राजाराम कॉलेज कोल्हापूर के पुस्तकालयोंसे ग्रंथ प्राप्त किये. अत: इन पुस्तकालयोंके ग्रंथपालोंकेभी मैं आभार मानता हूँ.

श्री. मोहन कुलकर्णी को भी धन्यवाद देना नहीं भूला जा सकता, जिन्होंने अत्यंत रुचि एवं श्रमसे समस्त टंकन कार्य संपादित किया हैं.

जैनेंद्रजीके उपन्यासोंके माध्यमसे साहित्याकाशमें विचरण करनेका यह मेरा प्रथम प्रयास हैं. पति पात्रोंका स्वरूप अधिक व्यापक और वैज्ञानिक रूपमें स्पष्ट करनेकी मैंने चेष्टा की हैं. इसमें कमियाँ होंगी - यह स्विकारनेमें मुझे संकोच नहीं हैं. जो कुछ कमियाँ हैं, वे मेरी अल्पज्ञयताकी अपनी कमियाँ हैं - जो कुछ विशिष्ट हैं वह गुरूजनोंका प्रसाद हैं.

अस्तु, अपनी अल्पज्ञताकी इस स्वीकृतिके साथ यह प्रबंध मैं, विव्दानोंके सुख शुभाशीर्वाद हेतु प्रस्तुत करता हूँ.

दि. २.५.१९८४

विनीत

वसंत सुर्वे